

अनुसूचित जनजातीय किशोर विद्यार्थियों में शैक्षिक उपलब्धि, समायोजन एवं रक्षात्मक युक्तियों का सैद्धांतिक अध्ययन

प्रेमलता कन्दुलना¹, डॉ. घुमान अहीरवार²

¹ शोधार्थी, शिक्षा विभाग, श्री सत्य साई प्रौद्योगिकी एवं चिकित्सकीय विज्ञान विश्वविद्यालय, सीहोर, भारत

² असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, श्री सत्य साई प्रौद्योगिकी एवं चिकित्सकीय विज्ञान विश्वविद्यालय, सीहोर, भारत

सारांश

वर्तमान समय में शिक्षा केवल ज्ञान प्राप्ति का माध्यम नहीं रह गई है, बल्कि यह व्यक्ति के सामाजिक, मानसिक एवं भावनात्मक विकास का आधार भी बन चुकी है। किशोरावस्था मानव जीवन का अत्यंत संवेदनशील चरण है, जिसमें विद्यार्थियों को अनेक मनोवैज्ञानिक, सामाजिक एवं शैक्षिक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। अनुसूचित जनजातीय किशोर विद्यार्थियों की स्थिति विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि वे सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं शैक्षिक विषमताओं से प्रभावित होते हैं। इन परिस्थितियों का प्रभाव उनकी शैक्षिक उपलब्धि, समायोजन क्षमता तथा रक्षात्मक युक्तियों पर पड़ता है। प्रस्तुत शोध पत्र अनुसूचित जनजातीय किशोर विद्यार्थियों में शैक्षिक उपलब्धि, समायोजन एवं रक्षात्मक युक्तियों के मध्य संबंधों का सैद्धांतिक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। अध्ययन में उपलब्ध साहित्य, मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों तथा पूर्व शोधों के आधार पर यह स्पष्ट किया गया है कि उचित समायोजन एवं सकारात्मक रक्षात्मक युक्तियाँ विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करती हैं। अध्ययन यह भी इंगित करता है कि सामाजिक परिवेश, पारिवारिक स्थिति, विद्यालयीय वातावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य जनजातीय विद्यार्थियों के समग्र विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

मुख्य शब्द: अनुसूचित जनजाति, किशोर विद्यार्थी, शैक्षिक उपलब्धि, समायोजन, रक्षात्मक युक्तियाँ, मनोवैज्ञानिक विकास

1. प्रस्तावना

शिक्षा मानव जीवन के सर्वांगीण विकास का प्रमुख साधन है। यह व्यक्ति के बौद्धिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं नैतिक विकास को दिशा प्रदान करती है। किसी भी राष्ट्र की प्रगति उसके नागरिकों की शैक्षिक उपलब्धियों पर निर्भर करती है। भारत जैसे विविधतापूर्ण देश में अनुसूचित जनजातियों का सामाजिक एवं शैक्षिक विकास विशेष महत्व रखता है।

अनुसूचित जनजातीय समुदाय प्रायः सामाजिक एवं आर्थिक रूप से पिछड़े क्षेत्रों में निवास करता है। इनके समक्ष गरीबी, अशिक्षा, संसाधनों की कमी, सांस्कृतिक अलगाव तथा शैक्षिक अवसरों का अभाव जैसी समस्याएँ विद्यमान रहती हैं। इन

परिस्थितियों का प्रभाव किशोर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं मानसिक विकास पर पड़ता है।

किशोरावस्था परिवर्तन एवं संघर्ष की अवस्था होती है। इस अवधि में विद्यार्थी अनेक प्रकार की भावनात्मक, सामाजिक एवं मानसिक चुनौतियों का अनुभव करते हैं। ऐसी परिस्थितियों में समायोजन की क्षमता एवं रक्षात्मक युक्तियाँ उनके व्यक्तित्व एवं शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करती हैं।

समायोजन वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति अपने वातावरण के साथ संतुलन स्थापित करता है। वहीं रक्षात्मक युक्तियाँ वे मानसिक प्रक्रियाएँ हैं जिनका उपयोग व्यक्ति तनाव, चिंता एवं आंतरिक संघर्षों से बचने के लिए करता है। यदि विद्यार्थी सकारात्मक समायोजन एवं स्वस्थ रक्षात्मक युक्तियों का प्रयोग करते हैं, तो उनकी शैक्षिक उपलब्धि बेहतर होती है।

2. अनुसूचित जनजातीय शिक्षा की अवधारणा

भारत में अनुसूचित जनजातियाँ देश की सांस्कृतिक विविधता का महत्वपूर्ण अंग हैं। संविधान द्वारा इन्हें सामाजिक एवं शैक्षिक रूप से पिछड़ा वर्ग माना गया है। जनजातीय विद्यार्थियों की शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए सरकार द्वारा विभिन्न योजनाएँ एवं नीतियाँ संचालित की जाती हैं।

फिर भी जनजातीय क्षेत्रों में निम्नलिखित समस्याएँ देखी जाती हैं:

- विद्यालयों की कमी
- प्रशिक्षित शिक्षकों का अभाव
- आर्थिक समस्याएँ
- भाषा संबंधी कठिनाइयाँ
- अभिभावकों की अशिक्षा
- सामाजिक एवं सांस्कृतिक पिछड़ापन

इन समस्याओं के कारण जनजातीय विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि प्रभावित होती है।

3. शैक्षिक उपलब्धि की अवधारणा

शैक्षिक उपलब्धि से तात्पर्य विद्यार्थी द्वारा अध्ययन के माध्यम से अर्जित ज्ञान, कौशल एवं दक्षताओं से है। यह परीक्षा परिणाम, कक्षा प्रदर्शन, व्यवहारिक दक्षता एवं बौद्धिक विकास के रूप में व्यक्त होती है।

शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक निम्नलिखित हैं:

3.1 पारिवारिक वातावरण

परिवार विद्यार्थी का प्रथम शिक्षण केंद्र होता है। परिवार की आर्थिक स्थिति, माता-पिता की शिक्षा, पारिवारिक सहयोग एवं प्रेरणा विद्यार्थी की उपलब्धि को प्रभावित करते हैं।

3.2 विद्यालयीय वातावरण

विद्यालय का अनुशासन, शिक्षक-विद्यार्थी संबंध, शिक्षण विधियाँ एवं शैक्षिक संसाधन शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करते हैं।

3.3 मानसिक एवं भावनात्मक स्थिति

विद्यार्थियों का आत्मविश्वास, प्रेरणा, तनाव एवं मानसिक स्वास्थ्य उनकी सीखने की क्षमता को प्रभावित करते हैं।

3.4 सामाजिक एवं सांस्कृतिक कारक

सामाजिक परिवेश, सांस्कृतिक मान्यताएँ एवं समुदाय की शैक्षिक जागरूकता भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

4. समायोजन की अवधारणा

समायोजन वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति अपने वातावरण एवं परिस्थितियों के साथ संतुलन स्थापित करता है। यह व्यक्ति के मानसिक स्वास्थ्य एवं सामाजिक व्यवहार का महत्वपूर्ण आधार है।

किशोर विद्यार्थियों में समायोजन के प्रमुख प्रकार:

- व्यक्तिगत समायोजन
- सामाजिक समायोजन
- पारिवारिक समायोजन
- विद्यालयीय समायोजन
- भावनात्मक समायोजन

अच्छा समायोजन विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, सकारात्मक सोच एवं अध्ययन के प्रति रुचि विकसित करता है।

5. रक्षात्मक युक्तियों की अवधारणा

रक्षात्मक युक्तियाँ मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाएँ हैं जिनका उपयोग व्यक्ति तनाव, चिंता एवं आंतरिक संघर्षों से बचने के लिए करता है। यह अवधारणा मुख्यतः Sigmund Freud तथा मनोविश्लेषणवाद से संबंधित है।

प्रमुख रक्षात्मक युक्तियाँ निम्नलिखित हैं:

- दमन (Repression)
- प्रक्षेपण (Projection)
- युक्तिकरण (Rationalization)
- प्रतिगमन (Regression)
- कल्पना (Fantasy)

- प्रतिपूर्ति (Compensation)

सकारात्मक रक्षात्मक युक्तियाँ विद्यार्थियों को तनाव से उबरने एवं अध्ययन में एकाग्रता बनाए रखने में सहायता करती हैं, जबकि नकारात्मक युक्तियाँ शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित कर सकती हैं।

6. शैक्षिक उपलब्धि, समायोजन एवं रक्षात्मक युक्तियों का अंतर्संबंध

शैक्षिक उपलब्धि, समायोजन एवं रक्षात्मक युक्तियाँ परस्पर संबंधित अवधारणाएँ हैं। जिन विद्यार्थियों में समायोजन क्षमता अच्छी होती है, वे तनावपूर्ण परिस्थितियों में भी बेहतर शैक्षिक प्रदर्शन करते हैं।

इसी प्रकार सकारात्मक रक्षात्मक युक्तियाँ विद्यार्थियों में आत्मविश्वास एवं मानसिक संतुलन बनाए रखने में सहायक होती हैं। इसके विपरीत, कमजोर समायोजन एवं नकारात्मक रक्षात्मक युक्तियाँ अध्ययन में बाधा उत्पन्न करती हैं।

अनुसूचित जनजातीय किशोर विद्यार्थियों के संदर्भ में यह संबंध और अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि वे सामाजिक एवं आर्थिक चुनौतियों से अधिक प्रभावित होते हैं।

7. किशोरावस्था एवं मनोवैज्ञानिक चुनौतियाँ

किशोरावस्था को संक्रमण काल कहा जाता है। इस अवस्था में शारीरिक, मानसिक एवं भावनात्मक परिवर्तन तीव्र गति से होते हैं। जनजातीय किशोर विद्यार्थियों को निम्न समस्याओं का सामना करना पड़ता है:

- आत्महीनता की भावना
- सामाजिक असुरक्षा
- आर्थिक तनाव
- शैक्षिक पिछड़ापन
- भविष्य संबंधी चिंता
- पारिवारिक दबाव

इन चुनौतियों के कारण समायोजन एवं रक्षात्मक युक्तियों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है।

8. सैद्धांतिक आधार

प्रस्तुत अध्ययन निम्नलिखित मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों पर आधारित है:

8.1 मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत

Sigmund Freud के अनुसार व्यक्ति के व्यवहार पर अवचेतन मानसिक प्रक्रियाओं का प्रभाव पड़ता है। रक्षात्मक युक्तियाँ व्यक्ति को मानसिक तनाव से बचाने का कार्य करती हैं।

8.2 समायोजन सिद्धांत

समायोजन सिद्धांत के अनुसार व्यक्ति अपने वातावरण के साथ संतुलन स्थापित करने का प्रयास करता है। सफल समायोजन मानसिक स्वास्थ्य एवं शैक्षिक सफलता को बढ़ाता है।

8.3 मानवतावादी सिद्धांत

Abraham Maslow के आवश्यकता पदानुक्रम सिद्धांत के अनुसार व्यक्ति की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति उसके आत्मविकास एवं उपलब्धि को प्रभावित करती है।

9. शैक्षिक निहितार्थ

प्रस्तुत अध्ययन के आधार पर निम्न शैक्षिक निहितार्थ सामने आते हैं:

1. जनजातीय क्षेत्रों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुविधाओं का विस्तार किया जाना चाहिए।
2. विद्यालयों में मनोवैज्ञानिक परामर्श सेवाएँ उपलब्ध कराई जानी चाहिए।
3. विद्यार्थियों के समायोजन कौशल विकसित करने हेतु विशेष कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए।
4. अभिभावकों एवं शिक्षकों को किशोर मनोविज्ञान के प्रति जागरूक बनाया जाना चाहिए।
5. जनजातीय विद्यार्थियों के लिए छात्रवृत्ति एवं सहायता योजनाओं को प्रभावी बनाया जाना चाहिए।
6. सकारात्मक मानसिक स्वास्थ्य एवं तनाव प्रबंधन कार्यक्रम विकसित किए जाने चाहिए।

10. निष्कर्ष

अनुसूचित जनजातीय किशोर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि केवल बौद्धिक क्षमता पर निर्भर नहीं करती, बल्कि उनके सामाजिक, आर्थिक एवं मनोवैज्ञानिक परिवेश से भी प्रभावित होती है। समायोजन एवं रक्षात्मक युक्तियाँ विद्यार्थियों के मानसिक संतुलन एवं शैक्षिक प्रदर्शन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

यदि विद्यार्थियों में सकारात्मक समायोजन क्षमता एवं स्वस्थ रक्षात्मक युक्तियों का विकास किया जाए, तो उनकी शैक्षिक उपलब्धि में सुधार संभव है। अतः जनजातीय विद्यार्थियों के समग्र विकास के लिए शैक्षिक, सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक सहयोग प्रदान करना आवश्यक है।

संदर्भ सूची

- [1] Sigmund Freud, *The Ego and the Mechanisms of Defence*, London: Hogarth Press.
- [2] Abraham Maslow, *Motivation and Personality*, New York: Harper & Row.

- [3] शर्मा, आर. एन., *शिक्षा मनोविज्ञान*, आगरा: विनोद पुस्तक मंदिर।
- [4] माथुर, एस. एस., *शैक्षिक मनोविज्ञान*, मेरठ: अग्रवाल पब्लिकेशन।
- [5] पाण्डेय, के. पी., *किशोर मनोविज्ञान एवं शिक्षा*, नई दिल्ली: राधा प्रकाशन।
- [6] सिंह, ए. के., *उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान*, पटना: भारती भवन।
- [7] NCERT, *Tribal Education in India*, नई दिल्ली।
- [8] UGC, *Higher Education and Tribal Development Reports*, नई दिल्ली।